IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

डॉ. लक्ष्मण झा ओ हुनक मैथिली आन्दोलन

शोध निदेशक
(डॉ राजकुमार झा) प्रो., अध्यक्ष, मैथिली विभाग
बीआरए बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
राजेश कुमार पाल (शोध विद्वान)
शोध छात्र
मैथिली विभाग, बी.ए. बी.यू., मुजफ्फरपुर

डॉ. लक्ष्मण झाक जन्म 5 सितम्बर 1916 ई. कँ दरभंगा जिलाक घनश्यामपुर प्रखंडक रसियारी गाममे भेल छलनि। हुनक पिताक नाम कारी झा आ मायक नाम कीर्ति देवी छलनि। डॉ. झा अपन सात भाय-बहिनमे सबसँ छोट छलाह। ओ चारि भाय आ तीन बहिन छलाह। हिनक दोसर बहिनक बियाह भगवानपुर गाममे छलनि जनिक कन्या डॉ. चन्द्रकला झा प्रख्यात साम्यवादी नेता श्री भोगेन्द्र झाक पत्नी छलखिन ।

ई प्राथमिक विद्यालयक शिक्षा अपना गाम रसियारीसँ केलनि आ तत्पश्चात् मधेपुरक कोरोनेशन हाइस्कूलसँ 1937 ई.मे प्रथम श्रेणीमे इंट्रेस परीक्षा पास केलनि। ओहि समयमे अंगरेजी, संस्कृत ओ मैथिलीक प्रख्यात विद्वान आ लेखक प्रो. रमानाथ झा ओहि स्कूलक प्रधानाध्यापक छलाह। रमानाथ बाबूक सबसँ प्रिय छात्र ई छलाह। हिनकर अंगरेजीक ज्ञानसँ रमानाथ बाबू बहुत प्रसन्न रहैत छलाह। लक्ष्मण झा प्रारम्भे सँ लखन जीक नामसँ प्रसिद्ध भ गेल छलाह।

1937 ई. मे लक्ष्मण झा भागलपुर टी.एन.जे. कॉलेजमे संस्कृत, तर्कशास्त्र आ अर्थशास्त्र विषयक संग इंटरमे नामांकन करौलनि। 1939 ई. मे प्रथम श्रेणीमे इंटरमीडिएट परीक्षा पास केलनि। 1941 ई.मे लखनजी पटना कॉलेजसँ संस्कृत ऑनर्सक संग स्नातक परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त क स्वर्णपदकसँ अलंकृत भेलाह। 1941 ई. मे पटना कॉलेजमे एम.ए. मे नाम लिखौलनि, मुदा बीचहिमे स्वतंत्रता आंदोलनक अंतिम संग्राम 'भारत छोड़ो' आंदोलनमे 1942 ई.क अगस्तमे सम्मिलित भ' गेलाह आ एम.ए. पास करबाक मार्ग बाधित भ' गेलनि। एहि आंदोलनमे सक्रिय भेलाक किछु दिनक बाद गिरफ्तार भ' जहल चल गेलाह।'

जहलसँ मुक्त भेलाक बाद लखनजी बिहार सरकारक स्कॉलरशिप पर लंडन विश्वविद्यालयमे एम.ए. आ पी-एच.डी. करबाक लेल इंगलैंड गेलाह। ओतय लंडन विश्वविद्यालयसँ 1947 मे एम.ए. आ 1949 ई. मे 'मिथिला आ मगध विषय पर पी-एच.डी. क उपाधि प्राप्त केलनि। हिनक निर्देशक छलथिन डॉ. कैनिय कॉडिंग्स आ परीक्षक छलथिन डॉ. रॉलिन्सन। ई दूनू गोटे इतिहास आ पुरातत्त्व विषयमे निष्णात ओ विख्यात विद्वान छलाह।

डॉ. झा पटना विश्वविद्यालयमे किछु दिन प्राध्यापक रहलाह फेर बिहार सरकारक काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थानमे उपनिदेशक भेलाह। ओत' ताहि समय निदेशक छलाह राष्ट्रीय स्तरक ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ. ए.एस. अष्टेकर। डॉ. झाकँ बिहार सरकारक स्कॉलरशिप पर उच्च शिक्षण प्राप्त करबाक लेल शर्त छलनि जे आपस अयला पर कम से कम पाँच वर्ष धरि बिहार सरकारक योग्यतानुसार कोनो उपयुक्त पद पर काज कर' पड़तनि। मुदा डॉ. साहेब ककरो अन्दरमे काज करबाक लेल बनले नहि छलाह आ शीघ्र ओ डॉ. अष्टेकरसँ खटपट आरंभ भ' गेलनि। डॉ. साहेब जीवन भरि केकरो मोजर नहि देलथिन आ 1952 ई.मे पाँच वर्ष पूरा क ओ पद छोड़ि देलनि। 1952 ई.मे केर प्रथम आम चुनावमे ई सोशलिस्ट पार्टीसँ दरभंगा पूर्वी संसदीय क्षेत्रसँ उम्मीदवार भेलाह जाहिमे ई चुनाव हारि गेलाह। सी.एम. कॉलेज दरभंगामे सेहो ई इतिहासक प्राध्यापक भेल छलाह। 1977-78 ई.मे डॉ. साहेब ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय केर कुलपति सेहो भेल छलाह। जॅ सामंजस्य करब डॉ. साहेब जनितथि तँ हुनकासँ राष्ट्र आ समाज, संगहि विशेष रूपसँ हुनक पिछड़ल गाम रसियारी

(घनश्यामपुर) केर बहुत कल्याण होइतहिं ओ क्षेत्र पचास वर्ष पहिनहि विकसित भ' जइतहि।

मिथिलाक्षर (मैथिली लिपि) केर विकासक लेल डॉ. साहेब बहुत काज केने छलाह। 3 अगस्त 1953 ई. कैं अपना द्वारा संपादित मिथिला नामक मैथिली साप्ताहिकमे संपादकीय टिप्पणीमे मिथिलाक्षरक विषयमे ओ लिखैत छथि- "भाषा साहित्य दर्शन विज्ञान आ संगीतक संगहि मिथिला अपन लिपिओ रखने अछि, ओ समस्त प्राचीन साहित्य अपनहि लिपिमे लिखल वर्तमान अछि।

मिथिलाक ई लिपि बंगालक लिपिसँ प्रायः अभिन्न अछि। असलमे प्राचीन समयमे समस्त पूर्वोत्तर भारत मिथिला, मगध ओ गौड़ बंगक लिपि एके छल, जकर नाम इतिहासकार सब पूर्वोत्तर लिपि देने छथि। मिथिलाक्षर-बंगाक्षर ताहि पूर्वोत्तर लिपिक किंचित भिन्न रूप थिक। आइयक जे नेपालक मिथिला अछि ताहि क्षेत्रकें डॉ. झा सर्वप्रथम नेपालसँ मुक्त करेबाक आंदोलन चलेलनि आ मिथिला सोशलिस्ट पार्टीक तत्वाधानमे 'गोरखा पायाक विरोध' नामसँ पाया सभ तोड़बाक योजना बनेलनि। ओहि संबंधमे ओ पुस्तक लिखलनि, पर्चा छपेलनि आ भाषणसँ सीमापारक लोककँ जगेलनि। एहि क्रममे हुनक पोथी 'द नौरदर्न बोर्डर' 1955 ई. मे प्रकाशित भेल। परन्तु जखन भारत सरकार ओहि पर ध्यान नहि देलक तखन एहि अंतर्राष्ट्रीय समस्याक समाधान एक छोट क्षेत्रीय संस्थाक आंदोलनसँ कहाँ धरि संभव छलैक ?

1954 ई. मे भारत सरकार राज्य पुनर्गठन आयोगक निर्माण केलक। मिथिलासँ मैथिली महासभा, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद् आ किछु संस्था सभआयोगक समक्ष मिथिला प्रांतक निर्माणक लेल स्मार पत्र देलक, मुदा आयोग ओहि पर ध्यान नहि देलक कारण जे आयोग मानैत छल जे मैथिली स्वतंत्र भाषा नहि थिक।

एहि संबंधमे डॉ. लक्ष्मण झा सर्वप्रथम अपन आंदोलन प्रारंभ केलनि। ओही समयमे कलकत्ताक कल्याणी कांग्रेसक आयोजन भेलैक। मिथिला केसरी जानकी नंदन सिंह ओहि कालमे कांग्रेसक प्रख्यात नेता छलाह आ बिहार विधान सभाक मुखर सदस्यक संगहि दरभंगा जिला डिस्ट्रिक्ट बोर्डक सेहो चेयरमेन छलाह। बिहारक कांग्रेसी नेता आ मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंहक ओ बहुत प्रिय व्यक्ति छलाह। जानकी बाबू साठि गोट कांग्रेसी प्रतिनिधिक संग मिथिला प्रांतक निर्माणक लेल स्मार पत्रक संग कलकत्त लेल विदा भेलाह। आसनसोल स्टेसन पर हुनका सबकें गिरफ्तार क' जेल पठाय देल गेलै।

राज्य पुनर्गठन आयोग जे डॉ. लक्ष्मण झा आ आन गोटेक आंदोलनककैं कोनो महत्व नहि देलकैक तकर मात्रा एक गोट कारण छल-मैथिली भाषा आ ओहि आधार पर फराक राज्य निर्माणक विरुद्ध कांग्रेसी सरकार आ हिन्दीक पक्षधर लोकनिक संयुक्त षड्यंत्र आ दोसर कारण छल जे मिथिला क्षेत्रक कियो अखिल भारत स्तरक मुखर आ प्रखर नेता कांग्रेसमे नहि छलाह।

डॉ. झा लिखैत छथि मिथिला संसारक अठारह गोट संप्रभु राज्यसँ क्षेत्रक हिसाबसँ पैघ अछि जेना-अलवानियाँ, अंडोरा, बेल्जियम, भूटान, डेनमार्क, डोमिनिकन रिपब्लिक, इरे, हेटी, इजराइल, लेबनान, लक्जेमबर्ग, मोनाको, नीदरलैंड्स, पोलैंड, सैलबाडोर, सेनमैरिनी, स्विटजरलैंड, मेटिकन सिटी। आधुनिक राजनीतिशास्त्रमे कोनो क्षेत्रककें राज्य बनबाक लेल क्षेत्र आ जनसंख्याक सीमा ओ संख्याक निर्धारण नहि कएल गेल अछि।

एहि तरहँ डॉ. लक्ष्मण झा मिथिलाक एकटा अद्भुद विद्वान भेलाह जे मात्र मिथिलेक स्वतंत्र अस्तित्वक लेल सदैव सोचैत विचारैत रहलाह तैं हुनका मिथिलाक गांधी सेहो कहल गेलनि।

संदर्भ-

1. पृष्ठ-15 1. सुरेश्वर झा, भारतीय साहित्य निर्माता, लक्ष्मण झा, साहित्य अकादमी, दिल्ली, 1999।
2. वाह, पृष्ठ-15
3. वाह, पृष्ठ-15
4. वेइह, पृष्ठ 10। 48 के अनुसार